झारखंड का हिंदी-खोरठा पाक्षिक पत्र

आपन माटी आपन देश

झार न्यूज

राँची, शुक्रवार
01 से 15 जुलाई 2022
पेज : 06, मूल्य : ₹ 2
वर्ष : 01, अंक : 01
झारखंड संस्करण
UDYAM-JH-19-0000800

jharnewskhortha@gmail.com

Digital Edition

कौन होंगे 15वें राष्ट्रपति?

प्रणय प्रबोध पाठक,राँची

देश के प्रथम नागरिक के चयन को लेकर 18 जुलाई 2022 को अप्रत्यक्ष रूप से मतदान होना है. एनडीए की ओर से झारखंड की पूर्व राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू को उम्मीदवार बनाया गया है. विपक्षी दलों ने भारत के पूर्व वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा को उम्मीदवार घोषित किया है. द्रौपदी मुर्मू ने एनडीए की ओर से दावेदारी जताते हुई 24 जून को संसद भवन में नामांकन किया, वहीं यशवंत सिन्हा ने भी 27 जून को नामांकन पर्चा दाखिल किया है. देश के पंद्रहवें राष्ट्रपति के रूप में इन दोनों के बीच मुकाबला नजर आ रहा है. हालांकि रायसीना की रेस में कौन आगे और कौन पीछे है. इसे कई तरह से समझा जा सकता है.

- दोनों राष्ट्रपति उम्मीदवारों का झारखंड से गहरा संबंध
- राज्यसभा में वर्तमान में कुल सांसदों की संख्या 245
- लोकसभा में वर्तमान में कुल सांसदों की संख्या 545
- पूरे भारतवर्ष में विधानसभा और विधान परिषद् के सदस्यों की संख्या 4565 के करीब

यशवंत

- राजनीति विज्ञान से स्नातकोत्तर हैं यशवंत
- सन् 1960 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में दिया योगदान
- 24 वर्षों तक प्रशासनिक पदाधिकारी के रूप में दी सेवा
- सन् 1984 में सक्रिय राजनीति से जुड़े
- अटल बिहारी वाजपेयी के मंत्रिमंडल में विदेश मंत्री रहे
- केन्द्रीय वित्त मंत्री के पद को भी यशवंत ने सुशोभित किया
- राजनीतिक और आर्थिक विषयों पर यशवंत की है अच्छी पकड़

द्रौपदी

- NDA से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू
- झारखंड की पहली महिला राज्यपाल हैं द्रौपदी मुर्मू
- देश की पहली आदिवासी महिला राज्यपाल हैं द्रौपदी
- उड़ीसा के संथाल परिवार द्रौपदी का जन्म
- शिक्षिका के रूप में व्यवसायिक जीवन की शुरुआत
- द्रौपदी के दादा और पिता थे ग्राम प्रधान
- सादगीपूर्ण जीवनशैली के लिए जानी जाती हैं द्रौपदी मुर्मू

रायसीना की राह पर द्रौपदी और यशवंत

यशवंत सिन्हा कई मायने में चौतरफा घिरे नजर आ रहे हैं, क्योंकि झामुमो सहित कई दलों ने एनडीए उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू को समर्थन दिया है। ऐसा माना जा रहा है कि झामुमो के विधायक और सांसद भी द्रौपदी मुर्मू का ही समर्थन करेंगे। झारखंड में झामुमो से लोकसभा और राज्यसभा के भी कई सांसद हैं। जिसके कारण यशवंत सिन्हा के लिए चुनौतियां बढ़ती नजर आ रही हैं।

हजारीबाग से भाजपा सांसद सह राष्ट्रपति उम्मीदवार यशवंत सिन्हा के बीच भी ऊहापोह की स्थिति बनी हुई है। एक ओर जहां यशवंत सिन्हा जयंत सिन्हा से समर्थन की आस लगाए बैठे हैं। वहीं जयंत सिन्हा ने भाजपा के कार्यकर्ता के रूप में दायित्व के निर्वहन की बात कही है।

झारखंड से गहरा संबंध

राष्ट्रपति पद के दोनों उम्मीदवारों का झारखंड से गहरा संबंध है. एनडीए से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू झारखंड की पहली महिला राज्यपाल रही हैं और देश की पहली आदिवासी महिला राज्यपाल भी हैं. यशवंत सिन्हा ने हजारीबाग संसदीय क्षेत्र से चुनाव में जीत हासिल की और संसद भवन तक का सफर तय किया. यशवंत सिन्हा के पुत्र जयंत सिन्हा वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के हजारीबाग सीट से सांसद हैं.

क्यों आ रहा रायसीना का नाम?

रायसीना एक पहाड़ी है. जो कि भारत की राजधानी नई दिल्ली में स्थित है. इसी पहाड़ी पर भारत के प्रथम नागरिक यानी कि राष्ट्रपति का आवास और कार्यालय बना है. इससे कुछ दूरी पर संसद भवन, इंडिया गेट, विजय चौक और राजपथ है. रायसीना हिल्स का संबंध मल्चा गांवों के रायसीना परिवार से है. जिस कारण से राष्ट्रपति चुनाव को रायसीना की रेस भी कहा जा रहा है.

कौन बनेंगे 15वें राष्ट्रपति?

विपक्षी दलों की ओर से 84 वर्षीय यशवंत सिन्हा को उम्मीदवार तो बनाया गया है... लेकिन समर्थन को लेकर अटकलें नजर आ रही हैं... वहीं झारखंड की पूर्व राज्यपाल सह एनडीए से राष्ट्रपति उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू का रास्ता साफ नजर आ रहा है... सिन्हा कैंपेनिंग के जरिए समर्थन जुटाने में लगे हैं और इस चुनाव को अपने करियर का अंतिम चुनाव मान रहे हैं... अब सभी की नजरें इस बात पर टिकी है कि शवंत सिन्हा को किन-किन पार्टियों के विधायक और सांसद समर्थन देते हैं. या फिर आदिवासियों के हित की रक्षा करते हुए आदिवासी उम्मीदवार के पक्ष में अधिक मतदान होता है... बहरहाल, देश के पंद्रहवें राष्ट्रपति के पद को कौन सुशोभित करता है, यह तो वक्त ही बताएगा.

1932 का खतियान और भाषा आंदोलन से चर्चा में आएं महावीर

धनबाद : धनबाद जिला के बाघमारा प्रखंड स्थित कपूरिया बांधडीह निवासी महावीर 1932 खतियान और भाषा आंदोलन के समय से चर्चा में बने हुए हैं। महावीर महतो सामी 1932 खतियान आंदोलनकारी जयराम महतो से प्रभावित हुए। आंदोलन को गति देने और 1932 के खतियान को लागू करने के लिए महावीर ने भित्तिचित्र बनाना शुरू किया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से चित्रकारी में स्नातक पास करने के बाद महावीर को लाखों रुपए का पैकेज मिला था। लेकिन महावीर ने अपनी माटी से जुड़ा रहना ठीक समझा और चित्रकारी के दम पर मुकाम को हासिल करने में लगे हैं।

गिरिडीह के बगोदर स्थित खेतको उच्च विद्यालय की चाहरदीवारी पर झारखंड की संस्कृति को उकेरा। धीरे-धीरे राज्य के विभिन्न जिलों की दीवारों में महावीर ने भित्तिचित्र बनाना शुरू किया। जो कि केवल 1932 के खतियान के मांग से ही नहीं जुड़ा है, बल्कि झारखंड के रिति-रिवाज, परंपरा, संस्कृति, परिवेश, रहन-सहन और तौर-तरीके को बतलाता है। महावीर का मानना है कि अधिक से अधिक लोग झारखंड के बारे में जानें, लोग राज्य के बारे > देखे P03

द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार

द्रौपदी मुर्मू का व्यक्तिगत जीवन

भारतीय लोकतंत्र की बात करें, तो यहां की जनता समाज के वैसे लोगों को अपना सिरमौर बनाना चाहती है. जो सभी कामों में परिपक्व और सही समय पर सही फैसले ले सके. द्रौपदी मुर्मू की बात करें, 20 जून 1958 को इनका जन्म ओड़िशा के मयूरभंज जिला स्थित बैदापोसी गांव के संथाल परिवार में हुआ था. द्रौपदी के पिता का नाम बिरंचि नारायाण टुडू था. द्रौपदी के दादा और पिता दोनों ही गांव के प्रधान रहे हैं. द्रौपदी का विवाह श्याम चरण मुर्मू से हुआ. विवाह के बाद इनके दो बेटे और एक बेटी हुई. दुर्भाग्यवश दोनों बेटे और पति की अलग-अलग समय पर अकाल मृत्यु हो गयी. पुत्री का विवाह हो चुका है और वो भुवनेश्वर में निवास करती है. द्रौपदी मुर्मू ने एक अध्यापिका के रूप में अपने व्यवसायिक जीवन की शुरुआत की. उसके बाद धीरे-धीरे राजनीति में आ गयीं. द्रौपदी मुर्मू व्यवहार कुशल, मृदुभाषी, शांत, संयमित और स्वयंसेवी महिला हैं.

द्रौपदी मुर्मू का राजनीतिक जीवन

वर्ष 1997 में राइरंगपुर नगर पंचायत के पार्षद चुनाव में जीत दर्ज कर द्रौपदी ने राजनीतिक जीवन का आरंभ किया. भारतीय जनता पार्टी के अनुसूचित जनजाति मोर्चा के उपाध्यक्ष के रूप में काम किया. साथ ही भाजपा की आदिवासी मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य भी रहीं. वर्ष 2000 और 2009 में भाजपा ने रायरंगपुर सीट से उम्मीदवार बनाया था. दोनों बार विधानसभा चुनाव में द्रौपदी ने जीत हासिल की. ओड़िसा में नवीन पटनायक के बीजू जनता दल और भाजपा गठबंधन की सरकार में द्रौपदी मुर्मू को वर्ष 2000 और 2004 के बीच वाणिज्य, परिवहन और बाद में पशु, मत्स्य विभाग का मंत्री बनाया गया. वर्ष 2015 में झारखंडी की नौवीं राज्यपाल के रूप में शपथ ग्रहण किया.

झारखंड की पहली महिला राज्यपाल बनने का खिताब द्रौपदी मुर्मू के नाम रहा है. साथ ही वह किसी भी भारतीय राज्य की राज्यपाल बनने वाली पहली आदिवासी महिला भी हैं.

यशवंत सिन्हा, राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार

यशवंत सिन्हा का व्यक्तिगत जीवन

बिहार के पटना के चित्रगुप्तवंशी कायस्थ परिवार में यशवंत का जन्म 06 नबंवर 1937 को हुआ. वर्ष 1958 में राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की. वर्ष 1960 तक इसी विषय की शिक्षा दी. यशवंत वर्ष 1960 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल हुए. चार वर्षों तक सब-डिवीजनल मजिस्ट्रेट और जिला मजिस्ट्रेट के रूप में सेवा की. बिहार सरकार के वित्त मंत्रालय में दो वर्षों तक अवर सचिव और उप सचिव रहने के बाद भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय में उप सचिव के रूप में कार्य किया. प्रशासन सेवा के क्षेत्र में कुल 24 वर्षों का योगदान दिया और कई विकास कार्य में अपनी भूमिका निभाई.

यशवंत सिन्हा का राजनीतिक जीवन

वर्ष 1984 में भारतीय प्रशासनिक सेवा से इस्तीफा देने के बाद यशवंत जनता पार्टी के सदस्य के रूप में सक्रिय राजनीति से जुड़े. वर्ष 1986 में यशवंत को पार्टी का अखिल भारतीय महासचिव नियुक्त किया गया. वर्ष 1988 में राज्यसभा सांसद के सदस्य निर्वाचित हुए. वर्ष 1989 में जनता दल के गठन होने के बाद यशवंत को पार्टी का राष्ट्रीय महासचिव नियुक्त किया गया. चंद्र शेखर के मंत्रिमंडल में नवंबर 1990 से जून 1991 तक वित्त मंत्री के रूप में काम किया. वर्ष 1996 में भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता बनाए गए. मार्च 1998 में वित्त मंत्री नियुक्त किया गया. 22 मई 2004 तक संसदीय चुनावों के बाद नई सरकार के गठन तक विदेश मंत्री रहे. वर्ष 2005 में हजारीबाग विधानसभा सीट से यशवंत ने संसद में फिर से एंट्री ली. 13 जून 2009 को उन्होंने भाजपा के उपाध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया. 13 मार्च 2021 को ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस में शामिल होकर सक्रिय राजनीति में वापस लौटे. यशवंत को टीएमसी का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बना दिया गया. लेकिन राष्ट्रपति चुनाव में उम्मीदवार बनने के लिए यशवंत ने टीएमसी से इस्तीफा दे दिया. वर्तमान में विपक्ष की ओर से राष्ट्रपति के उम्मीदवार हैं.

युवाओं के दिल की आवाज: शशांक राज

प्रणय प्रबोध पाठक,राँची

युवाओं को देश का भविष्य और राष्ट्र निर्माता कहा जाता है। लेकिन इन युवाओं को जरूरत होती है एक सकारात्मक, ऊर्जावान और सशक्त नेतृत्वकर्ता की। जो उन्हें सही रास्ता दिखला सके और सभी समस्याओं का समाधान कर सके। झारखंड की राजधानी रांची ने भी देश को एक ऐसा ही नेतृत्वकर्ता दिया है। जिसने न केवल युवाओं को संगठित किया, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का परचम लहराया।

हम बात कर रहे हैं एक ऐसे युवा राजनेता की, जिसने कभी हार नहीं माना और चुनौतियों का सामना किया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् से बतौर छात्र नेता राजनीतिक जीवन की शुरूआत करने इस युवा का नाम शशांक राज है। रांची के रातू रोड स्थित मधुकम शास्त्री चौक निवासी शशांक ने वर्ष 2009 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की ओर से चलाए जा रहे सदस्यता कार्यक्रम से कॉलेज परिसर में जुड़े। धीरे-धीरे इनका रूझान राष्ट्रवाद की ओर बढ़ने लगा। अभाविप में बतौर कार्यकर्ता जुड़ने वाले शशांक अपनी कार्यशैली का लोहा मनवाया और

विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया। शशांक वर्ष 2017 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य बनें और इसी वर्ष रांची विश्वविद्यालय के सीनेट सदस्य भी चयनित हुए। इस दौरान झारखंड योग स्पोर्ट्स एसोसिएसन के सचिव पद को भी सुशोभित किया।

वर्ष 2017 में ही इन्होंने "ब्रिक्स यूथ समिट" में भारत का प्रतिनिधित्व किया। जहां झारखंड के आदिवासी समाज के त्योहार कर्मा पूजा की तस्वीर "ब्रिक्स फोटोग्राफी प्रतियोगिता" में पुरस्कृत भी किया गया। शशांक के उच्चतम शैक्षणिक योग्यता की बात करें, तो इन्होंने उषा मार्टिन एकेडमी से वर्ष 2012 में बीबीए से स्नातक किया है। जिसके बाद आईआईडीएल से पीजीपी इन लीडरशिप, पॉलिटिक्स एंड गर्वनेंश की पढ़ाई की है। आईआईडीएल से पढ़ाई करने के दौरान शशांक की इच्छा देश के कोर पॉलिटिक्स से जुड़ने की हुई। तब इन्होंने वर्ष 2018 में भारतीय जनता पार्टी का दामन थामा।

भारतीय जनता पार्टी में आने के बाद शशांक ने रांची की महापौर पद की उम्मीदवार आशा लकड़ा के पक्ष में चुनाव प्रबंधन किया। वर्ष 2018 में मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में घोड़ाडोंगरी विधानसभा क्षेत्र में काम किया। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा के दिल्ली स्थित केन्द्रीय कार्यालय में अमित शाह (वर्तमान केन्द्रीय गृह मंत्री) के चुनावी रैली > देखें P03

सामाजिक समरसात का अनूठा मिशाल है जगन्नाथपुरी मदिर

- रांची के धुर्वा में स्थित है जगन्नाथपुरी मंदिर
- नागवंशी राजा एनीनाथ शाहदेव ने कराया मंदिर निर्माण
- 1991 ई. में धराशायी हो गया था मंदिर का गर्भगृह
- मंदिर परिसर है आकर्षण का केन्द्र
- 331 साल पुराना है मंदिर का इतिहास

प्रणय प्रबोध पाठक,राँची

झारखंड की राजधानी रांची के रातू रोड चौक से महज 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित जगन्नाथपुर मंदिर की कहानी काफी रोचक है. यह मंदिर न सिर्फ इतिहास को संजोए है, बल्कि सामाजिक समरसता को जीवित रखने का परिचायक भी है. इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें, तो मंदिर के निर्माण की गाथा नजर आएगी. लेकिन मंदिर के करीब जाकर देखें, तो आधुनिकता खुली आंखों से नजर आएगी. आइए मन मोहने वाले इस धार्मिक स्थान के महत्व को विस्तार से जानते हैं।

ऐतिहासिक मान्यता

धुर्वा में स्थित जगन्नाथपुर मंदिर करीब 331 वर्ष पुरानी है। मंदिर का निर्माण दिसंबर 1691 ई. में नागवंशी राजा एनीनाथ शाहदेव ने कराया था. ठाकुर एनी नाथ शाहदेव अपने सेवक के साथ उड़ीसा स्थित पुरी गए थे। सेवक भगवान जगन्नाथ की भक्ति में लीन हो गया. कुछ समय बाद उसे जोर की भूख लगी और वो व्याकुल हो उठा. सेवक ने मन ही मन भगवान की आराधना की और भूख मिटाने के लिए भगवान का सुमिरन किया. भगवान ने वेश बदलकर सेवक के लिए भोजन की व्यवस्था की. सेवक ने पूरी दासतां ठाकुर एनीनाथ शाहदेव को सुनायी. उसी रात भगवान जगन्नाथ ठाकुर के स्वप्न में आए और पुरी से लौटकर विग्रह स्थान पर मंदिर की स्थापना की बात कही. ठाकुर ने देर न करते हुए रांची के धुर्वा में मंदिर की स्थापना की।

समाजिक समरसता का प्रतीक जगन्नाथपुर मंदिर

ठाकुर एनीनाथ शाहदेव ने मंदिर की स्थापना के साथ मानवीय मूल्यों की स्थापना की. अलग-अलग वर्ण के लोगों को उनके व्यवसाय के अनुरूप मंदिर की सेवा का कार्य सौंपा. उरांव परिवार को मंदिर की घंटी, तेल,भोग के लिए सामान देने की जिम्मेदारी दी. जिसे बंधन उरांव और बिमल उरांव आज तक निभा रहें हैं. कुम्हार परिवार के लोग मंदिर के लिए मिट्टी के बर्तन की व्यवस्था करते हैं. मुंडा परिवार को झंडा फहराने, पगड़ी देने और वार्षिक पूजा की व्यवस्था की जिम्मेदारी दी गयी है. रजवार और अहीर जाति के लोगों को भगवान जगन्नाथ को मुख्य मंदिर से गर्भगृह तक ले जाने की जिम्मेदारी दी गयी. बढ़ई परिवार को रंग-रोगन, तो लोहरा परिवार को रथ मरम्मत की जिम्मेदारी सौंपी गयी.

300 साल बाद ध्वस्त हो गया था गर्भगृह

मंदिर निर्माण के तीन सौ साल बाद याने कि वर्ष 1991 में सावन पूर्णिमा के दिन मंदिर का गर्भगृह स्वत: ध्वस्त हो गया था. जिसके बाद जगन्नाथपुर मंदिर न्यास समिति ने जगन्नाथपुर मंदिर पुनर्निर्माण समिति का गठन किया. जिसके बाद मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य शुरू हुआ. वर्तमान समय में 250 फीट ऊंची पहाड़ी पर 101 फीट ऊंचा जगन्नाथपुरी मंदिर राजधानी रांची में भक्तिरस का प्रवाह करती है.

नौ दिनों तक होता है रथयात्रा और मेले का आयोजन

आषाढ़ शुक्ल द्वितीय को चलती रथ मेले का आयोजन किया जाता है. हरि शयन एकादशी को घूरती रथ यात्रा का आयोजन होता है. आषाढ़ शुल्क द्वितीय को रथ पर बैठाकर भगवान जगन्नाथ को गर्भगृह से आधा किलोमीटर की दूरी पर स्थित मौसीबाड़ी ले जाया जाता है. हरि शयन एकादशी को भगवान जगन्नाथ को गर्भगृह में वापस लाया जाता है. इस दौरान लाखों की संख्या में श्रद्धालु रथयात्रा में शामिल होते हैं.

नौ दिनों तक चलने वाले रथयात्रा मेले में दूर-दराज से लाखों आदिवासी, गैर-आदिवासी और हरिजन रंग-बिरंगे परिधानों के साथ पहुंचते हैं. मंदिर परिसर के आस-पास लगे पेड़ों के नीचे अपना डेरा डालते हैं.

भव्य मेले का आयोजन आकर्षण का केन्द्र

मंदिर निर्माण के बाद सदियों से परिसर के आस-पास मेले का आयोजन होता रहा है. लेकिन बीते दो साल से कोरोना के कारण मेले का विशेष आयोजन नहीं हो पाया है. हालांकि रथयात्रा मेले का हमेशा से विशेष महत्व रहा है. क्योंकि यह कोई सामान्य मेला नहीं. बल्कि झारखंड की संस्कृति का हिस्सा है. इस मेले में झारखंडी संस्कृति से संबंधित सामानों और खाद्य पदार्थों की बिक्री जोरों पर होती है. जिससे संस्कृतियों का आदान-प्रदान होता है और झारखंड की संस्कृति को संरक्षित करने का जरिया बन जाता है.

मेले के विशेष आकर्षण का केन्द्र मौत का कुआं होता है. जिसे आम लोग जल्दी देख नहीं पाते. लेकिन मौत के कुएं के खिलाड़ी जो हैरत अंगेज प्रदर्शन करते हैं. उस प्रदर्शन को देखने वालों की आंखें खुली की खुली रह जाती हैं.

आधुनिक मंदिर परिसर

पहले लोगों को पहाड़ चढ़ने में काफी समस्या होती थी. क्योंकि सीढ़ियों की उपयुक्त व्यवस्था नहीं थी. लेकिन वर्तमान समय में स्लाइडर वे की व्यवस्था होने से लोग मोटरसाइकिल और कार तक लेकर मंदिर तक पहुंच सकते हैं. हालांकि सुरक्षा के दृष्टिकोण से पाबंदियां भी लगायी गयी हैं. भीड़ नियंत्रण करने को लेकर मंदिर परिसर में प्रशासन हमेशा अलर्ट मोड पर रहती है.

आजीविका का साधन जगन्नाथपुरी

एनीनाथ ने न केवल मंदिर का निर्माण कराया. बल्कि स्थानीय लोगों को आजीविका का साधन भी उपलब्ध कराया. प्राचीन काल से मंदिर के समीप कई व्यवसायी पूजन सामग्रियों की बिक्री करते आ रहे हैं. जिससे भगवान जगन्नाथ की तो पूजा होती ही हैं. साथ ही की परिवारों का जीवन भी चलता है.

दर्शन और समर्पण

भगवान जगन्नाथ के दरबार में जाने के बाद असीम शांति की अनुभूति होती है.

रोटी की तलाश, रात में किसी की मां भूखे सोई थी

राँची : चावल और गेहूं के एक दाने को उपजाने में करीब चार से पांच माह का समय लगता है। किसानों की कड़ी मेहनत के बाद थोड़ा-सा अनाज बाजार में आता है। जिसे अपनी गाढ़ी कमाई से हम किचन में लाते हैं। तब जाकर हम दो वक्त की रोटी अपने शरीर को दे पाते हैं।

इसी समाज में कई ऐसे लोग हैं, जो दो वक्त की रोटी जुटाने में दिन-रात मेहनत करते हैं। लेकिन कभी-कभी एक वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो पाती। कुछ पूंजीपति और मध्यमवर्गीय परिवार की बात करें, तो घरों में अक्सर अधिक खाना बनता है। जिसे खाकर वो खत्म नहीं कर पातें। आखिरकार बचे हुए अनाज को सड़क किनारे फेंक आते हैं। कभी वो सड़क किनारे पड़े-पड़े सड़ जाता है और बीमारी फैला जाता है। तो कभी कोई मां सड़क किनारे फेंकी रोटी को अपने बच्चों का निवाला बनाते नजर आती है और खुद भूखे सो जाती है।

हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हम भोजन बर्बाद न करें, बल्कि बचे हुए भोजन को अच्छी तरह से रोटी बैंक जैसी संस्था को दान करें। ताकि फिर कोई मां सड़क किनारे रोटी की तलाश करते नजर न आए।

फेंक रहे हो तुम खाना आज,
क्योंकि रोटी थोड़ी सूखी थी।
थोड़ी इज्जत से फेंकना साहब,
क्योंकि
रात में किसी की मां भूखे सोई थी।

भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य हैं शशांक

के प्रवास की व्यवस्था राष्ट्रीय सचिव तरूण चुग के साथ किया। वर्तमान में भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य और ओड़िसा राज्य के प्रभारी हैं। महज 29 साल की उम्र में केवल नेता नहीं बल्कि नेतृत्वकर्ता भी हैं शशांक राज।

शशांक के जीवन के लक्ष्य के बारे में बात करें, तो ये भारत के युवाओं की प्रतिभाओं को निखारना चाहते हैं। युवाओं के अंदर राष्ट्रवाद की विचारधारा को समाहित करना चाहते हैं। राष्ट्र के युवाओं को शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से सशक्त बनाना चाहते हैं।

ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि अबतक के सफर में शशांक के राह में अड़चनें नहीं आयी, लेकिन सभी बाधाओं को पार करते हुए शशांक ने राष्ट्रीय राजनीति में जगह बना ली है। देशवासी भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की एक झलक पाने को बेताब रहते हैं। लेकिन शशांक उन युवाओं में से एक हैं, जिन्हें देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का भी सानिध्य प्राप्त हुआ है।

शशांक सिर्फ एक युवा नेता और कुशल नेतृत्वकर्ता ही नहीं, बल्कि युवाओं के दिल की आवाज हैं। शशांक की मानें तो उनके जीवन में परिवर्तन का श्रेय अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् को जाता है, जहां से इन्हें राष्ट्रवाद और राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ अनुशासित जीवनशैली की प्रेरणा मिली।

NABET Accredited

GLOBAL MANAGEMENT AND ENGINEERING TECHNOLOGY INTERNATIONAL

केन्द्रीय भूमि जल प्राधिकरण (CGWA) जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से सभी भू-जल उपयोगकर्ता, जिसमें आवासीय अपार्टमेंट/ग्रुप हाउसिंग सोसायटी/शहरी क्षेत्रों की सरकारी जलापूर्ति एजेंसियां/थोक जल आपूर्तिकर्ता/औद्योगिक/अवसंरचना/खनन परियोजनाएं और स्वीमिंग पूल के लिए पीने और घरेलू उपयोग शामिल है.उपरोक्त सभी भूजल उपयोगकर्ता चाहे मौजूदा हों या नए, सभी को अद्यतन 30 सितंबर 2022 तक CGWA/CGWB की ओर से भू-जल निकासी के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) लेना जरूरी है. निर्धारित समयसीमा के अंदर NOC प्राप्त न करने की स्थिति में उपयोगकर्ता के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और भू-जल निकासी को अवैध माना जाएगा. अधिक जानकारी के लिए https://cgwa-noc.gov.in पर देखा जा सकता है. इस दिशा में परामर्शी के रूप में Quality Council of India से मान्यता प्राप्त Global Management and Engineering Technology International (GMET International) काम कर रही है. भू-जल निकासी के संबंध में उपयोगकर्ता परामर्श ले सकते हैं और NOC प्राप्त करने के लिए आवेदन करवा सकते हैं.नोट- GMET International अवशिष्ट जल प्रबंधन (STP/ETP), ठोस अवशिष्ट प्रबंधन, बायो मेडिकल अवशिष्ट प्रबंधन, जल प्रबंधन, पर्यावरण स्वीकृति (EC,CTE,CTO) आदि के लिए भी संपर्क कर सकते हैं.

Contact- +91 7779851279 (W), +91 7717706950, +91 8910788398
E-mail Id- gmetinternational@gmail.com
Director GMET InternationalDr. Rajnikant Bidyadhar
Office- M-88 Argora Housing Colony,
Argora, Ranchi, PIN Code- 834002 **Advt.**

भारतीय संस्कृति में लोटा-थाली का महत्व

- अभिवादन के दौरान होता है लोटा-थाली का प्रयोग
- भारतीय संस्कृति के संरक्षण में लोटा-थाली का उपयोग
- ऋषि-मुनियों ने बनायी है अतिथि सत्कार की परंपरा

- पैर धोकर किया जाता है अतिथि सत्कार
- विवाह में प्रचलित है पांव पूजने की परंपरा
- पांव धोने का है वैज्ञानिक महत्व

भारतीय संस्कृति, परंपरा और रीति-रिवाज के घोतक हैं ये लोटा-थारी। देखने में काफी सामान्य से बर्तन लगते हैं। लेकिन यदि इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें, तो हम एक ऐसे भारत का दर्शन करेंगे, जहां मेहमानों के स्वागत में लोटा और थाली का चलन सामान्य रूप से देखने को मिलता है। जब किसी के घर में कोई मेहमान कदम रखते हैं, तो घर के किसी कमरे मे जाने से पहले आँगन में उन्हें आदर पूर्वक बैठाया जाता है। परिवार के एक या दो सदस्य पीतल या कांसे की बाल्टी में जल भरकर लाते हैं। उसके साथ एक पीतल या कांसे का लोटा, एक थाली और कंधे पर गमछी होती है। आदरपूर्वक अतिथि के पांव को थाली में रखा जाता है और बहुत ही स्नेह से उनके दोनों पांव को गर्मी के दिनों में ठंडे और ठंड के दिनों में हल्के गर्म पानी से धोया जाता है। इसी दौरान अतिथि का अभिवादन कर उनसे आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। पैर धूलाने के बाद अतिथि को आदरपूर्वक घर के कमरे में प्रवेश कराया जाता है। हालांकि ये रिवाज वर्तमान समय में समाप्ति के कगार पर हैं।

भारतवर्ष में ऋषि-मुनियों के समय से चली आ रही यह परंपरा आज भी जीवित है। मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेश, बिहार और झारखंड सहित कई प्रांतों के विभिन्न जातियों में अतिथि सत्कार के समय पैर धोने की परंपरा सदियों से चलती आ रही है। इसका एक अन्य रूप विवाह के पैर पूजी के दौरान देखने को मिलता है। जब विवाह के बाद लड़की पक्ष की ओर से मंडप में मजलिस का आयोजन किया जाता है। इस दौरान वधू पक्ष की ओर से वर पक्ष के लोगों के पांव धोए जाते हैं, अभिवादन और वंदन के लिए मष्तक पर चंदन का टीका लगाया जाता है। स्नेह और प्रेम स्वरूप वधू पक्ष वर पक्ष के लोगों को उपहार भेंट करते हैं।

गुरुशुश्रषणे जिष्णु: कृष्ण: पादावनेजने।
गंगोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्॥

इसका अर्थ है कि गंगा जल की तरह पवित्र और सभी सुगंधों से युक्त यह जल मैं आपके (भगवान के) चरण धोने के लिए समर्पित करता हूं।

पैर धोने की इस परंपरा के पीछे सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व तो है हीं, साथ ही ऋषि-मुनियों की बनायी गयी इस परंपरा के पीछे वैज्ञानिक महत्व भी है। जिसके राष्ट्रव्यापी उदाहरण के रूप में हमारे सामने "स्वच्छ भारत मिशन है।" पैर धोने की इस परंपरा को सिर्फ ग्रामीण परिवेश में रहने वाले लोगों ने ही जीवित नहीं रखा है, बल्कि इसमें देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का भी अतुलनीय योगदान रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी अपनी मां हीराबेन मोदी के पांव धोते हैं और उस जल को आशीर्वाद स्वरूप अपनी आंखों पर लगाते हैं।

लेकिन आधुनिकीकरण के इस दौर में लोटा-थाली में जल भरकर अतिथि सत्कार की बात तो कोरी कल्पना मात्र लगने लगी है। संवाद संप्रेषण के लिए जब से लोग इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का प्रयोग करने लगे हैं। तब से अभिवादन के तरीकों में भी परिवर्तन आ गया है। प्रणाम-पाती के जगह अंग्रेजी शब्द "Hello" प्रचलन में है। पहले के समय में लोग अतिथि के आने पर खुश हुआ करते थे, लेकिन वर्तमान समय में लोग अपनी प्राइवेसी का हवाला देते नजर आ रहे हैं और अतिथि लेकिन वर्तमान समय में लोग अपनी प्राइवेसी का हवाला देते नजर आ रहे हैं और अतिथि सत्कार की बात तो दूर, अतिथियों को घर बुलाने से भी परहेज लोग खुद को इतना करते हैं।

इस श्लोक का अर्थ है "अर्जुन गुरुजनों की सेवा किया करते थे और भगवान श्रीकृष्ण अतिथियों के पांव पखारने का काम करते थे।"

वर्तमान जीवनशैली में व्यस्त बताने लगे हैं कि दो मिनट का समय किसी को देना तक नहीं चाहते। इसलिए लोग चरणस्पर्श को ट्रेडिशन और हैंड शेक को प्रोफेशनल मानने लगे हैं।

देश आधुनिकीकरण की ओर बढ़ रहा है। हम हर दिन नई तकनीकों से जुड़ते चले जा रहे हैं। लेकिन इन सबके बीच पश्चिमी देश हमारी सभ्यता और संस्कृति को अपना रहे हैं। पश्चिमी देश हमारी संस्कृति को अपना ट्रेंड बना रहे हैं, वहीं हम पश्चिमी सभ्यता को अपनाते जा रहे हैं। हमें दूसरों की सभ्यता और संस्कृति का सम्मान करना चाहिए, लेकिन अपनी सभ्यता और संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ मानकर सदियों से चली आ रही परंपरा को बरकरार रखना चाहिए।

1932 का खतियान और भाषा आंदोलन से चर्चा में आएं महावीर

धनबाद : में तभी जान पाएंगे, जब उसके इतिहास को जानेंगे। इसी के तहत महावीर ने दीवारों पर झारखंड से जुड़े स्वतंत्रता सेनानियों और महापुरूषों की पेंटिंग बनानी शुरू की। कलाकार के रूप में महावीर ने भगवान बिरसा मुंडा, रामदयाल सिंह मुंडा शहीद निर्मल महतो समेत कई लोगों के चित्र को दीवार पर उकेरा। साथ ही उनकी कही गयी बातों को श्लोगन के रूप में दीवार पर लिखा है।

झारखंड के ग्रामीण जीवन को समझना काफी कठिन है, क्योंकि यहां हर समुदाय का खान-पान और रहन-सहन अलग है। इसके बावजूद महावीर ने अपने आस-पास जो कुछ भी देखा। उसे रंग और ब्रश के जरिए दीवारों पर उतारने का प्रयास किया है। चाहे वह कृषक के रूप में हो या फिर ढेकी का प्रयोग करती महिलाएं।

कला के क्षेत्र में महावीर जिस तरीके से काम कर रहें हैं, उसे देखकर लोगों को ऐसा लग रहा है, मानों झारखंड में किसी ने कला के क्षेत्र में क्रांति की शूरुआत कर दी हो।

अपनी बदहाली पर रो रहा कुंदा किला

दरवाजे पर लिखा मिला देवनागरी कैथी भाषा

खजाने की तलाश मे किले के सुरंग में उतरी मुंबई की गोताखोर टीम हुए लापता

सोलहवीं शताब्दी काल की बनी किला।

एक पत्थर को तराश कर शिव मंदिर का हुआ निर्माण

झार न्यूज खोरठा में विज्ञापन के लिए संपर्क करें ...
मो० 7717748632

muddebaaz.in
मुद्देबाज- देश की बात

ओम प्रकाश कुमार

चतरा : आज भी अपने देश भारत मे राजाओं के कई ऐसे किले हैं, जो जर्जर अवस्था मे पड़ी हुई है। जिस पर ना तो आज तक सरकार की नजर गई और ना ही पुरातत्व विभाग की। हम जिस किले के बारे में आपको बताने जा रहे हैं, वो चतरा जिले के घोर नक्सल प्रभावित प्रखंड कुंदा मे पड़ता है। यह किला सोलहवीं शताब्दी काल की बनी हुई है। इस किले में रहने वाले राजघराने के लोग जयपुर और राजस्थान के खैरवार राजपूत जाती से ताल्लुकात रखते थे। इस किले के बारे में यह कहा जाता है, कि यहां अकूत संपत्ति छुपी हुई है। इस वीरान पडे किले का पुराना इतिहास व हकीकत जानकर आपका भी मन यहां आने को मचल जायेगा।

खंडहरे बताती हैं, कि इमारते कभी बुलंद हुआ करती थी

वीरान और खंडहरों में तब्दील पड़ा हुआ यह किला 16 वीं शताब्दी काल की बनी हुई हैं। इस किले के दरवाजे पर लिखी हुई लिपि देवनागरी कैथी भाषा में है। यह किला चतुर्भुज आकर का बना हुआ है। जिसकी लंबाई 92 मीटर चौड़ाई 56 मीटर और ऊँचाई 10 मीटर है। ये किला चारो तरफ से दुर्गम जंगल तीन नदिओं और पहाड़ो से घिरा हुआ है ,जो सुरक्षा के दृष्टिकोण से काफी महत्वपूण था। चतरा जिला के कुंदा में चेरो राजाओं का ये मध्यकालिन किला 1866 ई0 तक ठीक- ठाक था किंतु अब खंडहर में तब्दील हो चुका है। किला तरफ का भाग 10 मीटर चौड़ा, 13 मीटर उंचा और मुख्य दिवार लगभग 6 मीटर आगे बाहर निकला हुआ है।

1660 में औरंगजेब के मुगल सूबेदार दाउद खां ने किले पर किया था आक्रमण

इतिहासकार सह चतरा कॉलेज के पूर्व प्राचार्य इफ्तेखार आलम ने बताया कि यह किला जमीन से ऊपर तीन तल्ले तक निर्मित था। 1660 ई0 में औरंगजेब के मुगल सूबेदार दाउद खां ने इस किले पर अपनी भारी- भरकम फौज लेकर आक्रमण कर दिया। इस किले की सुरक्षा में तैनात सैनिक और औरंगजेब के मुगल सूबेदार दाउद खां के सैनिको के बीच 6 महीने तक घमासान युद्ध चलता रहा। छह महीने तक फौज की कमी होने के बावजूद भी कुंदा राजा के सैनिकों ने मुगल सेना को रोके रखा। मुगल शासक इस बात को जानते थे कि जब तक कुंदा राजा को परास्त नहीं कर दिया जाता है, तब तक पलामू के मेदनीराय के किले पर आक्रमन करना नामुमकिन है। इस लिहाज से मुगल शासन थक- हार कर 6 महीने बाद इस किले को तोप से उडाकर नेस्तनाबूत कर दिया पर उन्हें जीत हासिल नहीं हुआ। चूंकि ये किला पत्थर, सुर्खी चुना, गारा, बेल का लट्ठा और प्राचीन ईंटों से बना हुआ है। इस वजह से किले की दिवार तोप की मार को नहीं झेल सका। इतने पर भी मुगल गवर्नर दाउद खां कुंदा राजा को परस्त नहीं करने की स्थिति में पलामू की ओर अपना रुख कर लिया और पलामू स्थित मेदनीराय के किले पर आक्रमण कर दिया। जिसमे पलामू के राजा को औरंगजेब के मुगल गवर्नर के हांथो पराजित होना पड़ा। फिर भी जिस बहादुरी के साथ कुंदा राजा के सैनिको ने महान मुगल शाषक से छह महीनों तक मुगल शासको से लोहा लेकर अपनी वीरता का परिचय दिया वो वाकई में काबिले तारीफ है।

खजाने की तलाश मे किले के सुरंग में उतरी मुंबई की गोताखोर टीम हुये लापता

चूंकि कुंदा राजा का समय यानि सोलहवीं शताब्दी समय की गिनती एक समृद्ध और शक्तिशाली इलाके के रूप में की जाती थीं। जब हमने किले का मुआयना किया तो हमें एक कुआंनुमा एक खंडहर मिला, जिसमें आज तक उतरने की हिम्मत किसे ने नहीं की। जानकारों का मानना है कि एक बार मुंबई से आये गोताखोरो की टीम इस किले मे खजाने का पता लगाने उतरी तो आज तक वापस नहीं लौट सकी। इतना तो तय है कि अगर सरकार और पुरातत्व विभाग इस ओर पहल करे तो केरल के पद्दभामन मदिर की तरह यहां भी अकूत सम्पति मिल सकता है और साथ ही ये पूरा इलाका पर्यटन स्थक के रूप में विकसित हो सकता है।

जयपुर और राजस्थान जाकर बस गये राज घराने के लोग

सोलहवीं शताब्दी में मुगल शासक के आक्रमण के बाद इस राज घराने के लोग जयपुर और राजस्थान जाकर बस गये। इतना सब कुछ होने के बाद भी राजघराने के लोग कभी- कभार यहां पर पहले आया करते हैं। किला को देखने के लिये गिने-चुने पर्यटक भी यहां पर आया करते थे, पर अविभाजित बिहार के समय सन 1975-76 ई0 में सर्वप्रथम चतरा जिले के कुंदा प्रखंड में भाकपा माओवादी नक्सलियों की नीव पड़ गई जो आज भी राज्य का सर्वाधिक नक्सल प्रभावित इलाका माना जाता है। वर्तमान समय में परिस्थितियां बदली है, अब नक्सलियों का नामों- निशान इस इलाके में नहीं के बराबर है। मुगल शासक के बाद एक बार राजघराने के लोगों को नक्सलियों का कोपभाजन बनना पड़ा। नक्सलियों ने राजा के एक घर को विस्फोट कर उड़ा दिया था, जिसके बाद से राजघराने के लोग भी यहां आना बंद कर दिया और यह किला भूत बंगले में तब्दील हो गया।

पहाड़ को तराश कर शिव मंदिर का हुआ था निर्माण

कुंदा राजा के किले के पीछे स्थित एक ही पहाड़ी के पत्थर को तराश कर शिव मंदिर का निर्माण कराया गया था, जो आज भी किले के पीछे अवस्थित है। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग भी उसी पहाड़ी के एक पत्थर का हिस्सा है। इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यह कि यहां के शिवलिंग पर आज भी खुद- ब- खुद पानी अपने आप गिरता रहता है, जो एक शोध का विषय है। कुंदा राजा द्वारा बनाये गये इस मंदिर पर प्रति- वर्ष शिवरात्री के अवसर पर हजारों भक्तो की भीड़ लगती है और सालो भर यहां विवाह कार्यक्रम चलता रहता है। यद्धपि सरकार और पुरातत्व विभाग की इच्छा शक्ति और जन सहयोग की भागीदारी हो तो यह किला और मंदिर एक पर्यटन स्थल के रूप में फिर से विकसित हो सकता है और इसकी ख्याति पूरे देश में ही नहीं विदेशो में भी होगी। राज्य और केंद्र सरकार को इस पर्यटन स्थल से राजस्व के रूप मे सालाना लाखों रूपये की आमदनी होगी।

भारतीय पुरातत्व विभाग ने खुदाई का दिलाया था, भरोसा

कुछ वर्ष पूर्व इटखोरी स्थित भद्रकाली मंदिर का खुदाई करने पहुंची भारतीय पुरातत्व विभाग की टीम किले का निरीक्षण करने के बाद यहां के लोगों को यह आश्वासन दिलाया था, कि इस बात को केंद्र सरकार के पास भेजा जायेगा। जिसकी स्वीकृति मिलते ही इस जगह की खुदाई प्रारंभ कर दी जायेगी। जिससे इस स्थल का महत्व और भी बढ़ जायेगा। भारतीय पुरातत्व विभाग रांची अंचल के तात्कालीन अधिकारी एन.जी निकोसे ने भी इस बात की संभावना जतायी थी, कि किले के अंदर और आस- पास के इलाके में खुदाई करने से केरल के पद्दभामन मदिर की तरह यहां भी अकूत संपत्ति मिल सकता है, जो अपने आप में भारतीय पुरातत्व विभाग की एक बड़ी उपलब्धि होगी, लेकिन भारतीय पुरातत्व विभाग शायद इस बात को भूल गई और वर्तमान समय मे इतिहास का एक धरोहर कुंदा राजा का किला खुद अपनी बदहाली पर आंसू बहाता नजर आ रहा है।

आब गांव-गांव तक झार न्यूज खोरठा : अनाम अजनबी

राँची : झार न्यूज़ आपन माटी आपन देश के सोंधापन लइ के आइझ ऑनलाइन प्रिंट मीडिया में आइ गेल हइ। कह हथ नी की हर पहिल चीज के आदमी भुलाय नाय पारे हे। चाहे उ पहिल माइर या पहिल पियार हे। जिनगी भइर ईयाद राखे हे। आइझ झार न्यूज के पहिल अंक तोहिन के हाथ मे होंन आर हमरा बुझा हे की तोहिन भी ई पहिल अंक के जिनगी भइर भूले नाय पारबाय। आइझ से दु बछर पहिले झार न्यूज के सभे से खोरठा दिवस में मिलल हली। खोरठा समाचार चैनल में झार न्यूज पहिल चैनल लागे। जे आपन सुरुवात माय कोरवा भाषा खोरठा दिवस के दिन से सुरु भेल हे। आर आइझ तक आगु बढ़ते जाय लागल हे,आर बढ़ते रहत। एकर हर डेग में निष्पक्ष, निडर आर तथ्यपरक बात रहत।

पहिल अंक में पहिल सुभ सन्देश लिख के मन मे कते गुदगुदी होवे लागल हे। आशा होंन तोहिन खोरठा साहित्यकार, खोरठा परेमी ,खोरठा शोधार्थी , और खोरठा पढवइया सब के लिये झार न्यूज के खोरठा पेज बढ़िया लगतोंन। आर आपन मन के बात हिंया बिना डर ,बिना लाज के राखे पारबाई। इ पेज खास कइर के खोरठा साहित्यकार, खोरठा भासा परेमि, खोरठा शोधार्थी सोब खातिर ही हइ। तो आइझ से झार न्यूज में आपन माटी आपन देस के पढ़ा आर लिखा। सोब के जगह मिलतोंन, एकर में कोई दलगत,राजनीति के हावी होवेले नाय देल जइतय। हिंया किसान ,मजदूर, बेपारी सब के बात रहत। ई झार न्यूज खाली सहर के ही नाय गांव के लोगवइन के भी आवाज बनत।

एक बार छोट-बड़ सब के अभिनंदन सबके बधाई आर सबके आभार। झार न्यूज जन जन तक असथापित होवे, लोकपिरियता आर तरकी करे,निसपछ खबर के साथ आगु बढ़ते रहे। सावन के ढ़इरो ढ़इर सुभकामना के साथ तोहिन के अनाम अजनबी।

कविता

झाड़खंडेक सुपुत

माँज-माटि बाचाएक चेठा
सिदो-कान्हु जेइसन बेटा
गाँडे-गाँडे घुरि-घुरि
भाइ -बहिन आनदोलन कारि
मेटाइ देला महाजन सुदखरि
आर नाइ चलतउ जमिदारि।

आपन हक खातिर जागि
काँड़ -धेनुक फारसा टाँगि
आपन खेत आपन बारि
अँगरेज के देला मारि
मेटाइ देला महाजन साहुकारि
आर नाइ चलतउ जमिदारि।

चुन्नु माझिक बेटा - बेटि
बाचाउला भाइ माँज -माटि
सिदो कान्हु मने करि
हाथ जोड़ि जोहार करि
मेटाइ देला महाजन अतिआचारि
आर नाइ चलतउ जमिदारि ।

हुल जोहार
सुभद्रा कुमारी

खोरठा लोक गीतेक महानायक : विनय तिवारी

विनय तिवारी

संदीप कुमार महतो, खोरठा शोधार्थी

राँची : विनय तिवारी कोन्हो पहचान कर मोहताज नाइ हथ। ई ओहे विनय तिवारी लागथ, जे झारखण्डे खोरठा गीतकारेक रूपें बिखिआत हथ। विनय तिवारी झारखंडेक सबले लोकप्रिय आर आदरेक गीतकार लागथ। जिनखर दु तीन दसक तइक काजकाले ढ़ेइर उपलब्धि भरल पड़ल हइ। हालांकि विनय जी चाइर पांच भासाञ गीत लिखल हथ। मनतुक उनखर पहचान खोरठा भासाञ भेल। विनय जीक जादुई कलमें गीत लिइख के पुरा झारखंड के आपन दिवाना बनवल हथ।

विनय तिवारी जीक परिचइ :-

विनय तिवारी जीक जनम झारखण्ड राइजेक धनबाद जिलाक रोआम गांवे एगो साधारन पइरवारे 5 अक्टूबर 1974 ईसवी में भेलअइन। इनखर मायेक नाम बेला रानी आर बापेक नाम हरि प्रसाद तिवारी लागअइन। छउवे गरी ले ई सब एगो बुइधगर, तेजगर आर रंगचगीया गीदर हला। गरीब पइरवारेक खातिर टाका - पइसाक ढ़ेइर अभाव हल सइ खातिर ओतना लिखाइ-पढ़ाइ नाइ करे पारला। तावो टाइन-टुइन के कोन्हो रकम मेटरिक परिक्खा पास करला। एहे लगाइत इनखर पढ़े में ढेइर रूचि हलअइन। सइ खातिर आपन खरचा आपने चलाइ के आगु पढ़इत रहला आर अर्थशास्त्र लइखुन बी. ए. पास करला। मनतुक आपन माय - माटी मातरी भासाक अटुट परेम हलअइन आर छउवे गरी ले कोन्हो ना कोन्हो

विनय जीक उपलब्धियाँ :-

- झारखंड सरकारेक पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिबु सोरेन जीक बाटे ले बछर 2008 में 'खोरठा गौरव अवार्ड'।
- नेट इंडिया सुविधा कार्इस लिमिटेड कंपनी बाटे ले 'खोरठा रत्न सम्मान'।
- श्री मथुरा प्रसाद महतो खादय आपूर्ति / भू . राजस्व मंत्री झारखंड सरकार बाटे ले 2011 में खोरठा गीत संगीत व सिनेमा कर छेतरें जोगदान खातिर 'खोरठा सम्मान' से सम्मानित।
- पर्यटन कला संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग , सांस्कृतिक कार्य निदेशालय झारखंड सरकार बाटे ले 21 मार्च 2016 के खोरठा लोक गीत कर छेतर में जिमिरजिट जोगदानेक खातिर 'सांस्कृतिक सम्मान' से सम्मानित।
- श्री निवास पानुरी स्मृति बा श्री निवास पानुरी खोरठा प्रबुद्व सम्मान से सम्मानित।
- ऋषिकेश स्मारक सेवा समिति बाटे ले 'खोरठा गीत सम्मान' से सम्मानित।
- प्रथम झारखण्ड अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में 'श्रीनिवास पानुरी मेमोरियल अवार्ड फॉर खोरठा लिटरेचर सम्मान' से सम्मानित।
- झारखण्ड फिल्म निर्माता संघ बाटे ले 'झारखण्ड कला रत्न' सम्मान।
- पहिल झारखण्ड नेशनल फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट गीतकार ऑफ खोरठा सम्मान से सम्मानित।
- ऋषिकेश स्मारक सेवा समिति बाटे ले 'खोरठा श्री' सम्मान से सम्मानित।
- दवितीय झारखंड नेशनल फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट स्क्रिप्ट राइटर ऑफ खोरठा सम्मान से सम्मानित।
- आधुनिक व अति लोकप्रिय खोरठा गीत लेखन बा खोरठा गीत संगीत सिनेमा कर बिकास में विशिष्ट जोगदान खातिर खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद् बाटे ले खोरठा कला संस्कृति रत्न सम्मान से सम्मानित।
- आधुनिक गीत संगीत बा सिनेमा कर बिसेस जोगदान खातिर जागो जगाओ सांस्कृतिक कला मंच कर बाटे ले 'अखड़ा सम्मान' से सम्मानित।
- नमन इंटरनेशनल फाउंडेशन फॉर एडुकेशन एंड सोशल रिसर्च बाटे ले नमन बिरसा मुंडा झारखंड रत्न सम्मान से सम्मानित।

लिखइते रह हला । कयेक भासा मैं लिखला खोरठा, नागपुरी, बंगला, भोजपुरी, हिन्दी आरो - आरो। मकिन खोरठा इनखर आपन मातरी भासा हलअइन। एकरे में आगु चइल के एक ले एक गीत लिखे लागला, लोके इनखर गीत के ढ़ेइर पसींद करे लागलथीन। एक समय अइसन आइल की जखन झारखण्डेक गांवे - गांवे ,घरे- घरे इनखर गीत लोके सुने लागला। इनखर जे गीत हलअइन ऊ झारखण्डेक भासा संसकिरति, गरीब ,दुखिया सामाजिक, धारमिक , परब तिहार आर उलगुलानेक खातिर हल। इनखर गीतें ऊ रस हलअइन जे लोकें आपन काम छोइड़ - छोइड़ के सुनो हला। अइसने गीते मिठास भरल लइ आर ताल हइ। विनय जी खुब चरचित भेला। झारखंडे नाइ बिचकुन राइजेक छाड़ा दोसरो राइजे आर विदेस में बिख्यात भेला। आखिर ऊ दिन टा आइ गेल जखन विनय तिवारी जी, खोरठा गीतकार के नाम से पुरा झारखण्ड में छाइ गेला। आइझो ई सब गीत लिखइत हथ। आसा करहियेन जे आगुवो लिखइते रहता आर आपन मातरी भासा के बिकास करइत रहता।

खोरठाक महान कवि श्रीनिवास पानुरी जी ई झोरा के लिखल हला। ऊटा आइझ सच देखाइ रहल हे । माने विनय जी छउवे घरी एगो परन लेल हला जे हामर खोरठा भासा आइझ एतना पाछु काहे हे। एकरा हाम जाब तक नाइ गोटा देस - विदेसे पसराइबइ ताब तक सुगुम नाइ रहब। करला लिखेक सुरू आर एतना लिखला तकर कोइ ठोर ठेकान नाइ। हजारो- हजार गीत लिइख देला। करीबन 10 बछर ले सुरू करल हला जे एखन तइक लिखइते हथ। आइझ ऊ दिन टा आइ गेल हे, माने गोटा झारखंड छाड़ा देस - बिदेसें खोरठा गीत लिइख खुन सब के खोरठाक दिवाना बनाइ छाड़ला। आइझ खोरठा गीत संगीतेक छेतरे अलबत काम कइर के खोरठा भासा के राष्ट्रीय स्तरें पहचान दियावल हथ।

खोरठा बिकासेक डहरें आर विनय तिवारी :-

देसेक अठाइसवां राइज झारखण्ड परजाति , परकिरति आर भासा - संसकिरतिक एगो भिनु अलेदा प्रदेस हे। हिञा तीन गो भासा पइरवार हइ आग्नेय, द्रविड़ आर आर्य पइरवारे एक दरजन ले बेसी भासा बोलल जा हइ। जे झारखंडेक खांटी भासा हइ। जेकर में खोरठा सबले बोड़ छेतर में बोलल जा हइ। झारखंडेक 24 जिला में 17 जिलाञ बोलल जा हइ। 2011 कर जनगणनाक अनुसारे 84 लाख खोरठा बोलवइया हथ। एखन झारखंडेक दुसरा राइज भासा में दरजा दियल गेल हइ। जेकर लिखाइ- पढ़ाइ 8 क्लास ले पीएचडी आर डी लिट् भी होइ रहल हे। एक समय हल जखन लोक खोरठा बोले बतयाइ में लाज लागो हलअइन। ओकरा देहाती भासा बोइल के हिन भावनाञ देखो हला। मनतुक ओहे हिन आर देहाती भासा के एगो चिन्हा बा लोकप्रिय बनवे में विनय तिवारी जीक घाम गरवा जोगदान हइन। विनय जी आबगा पहरेक बेरा में समाज आर परकिरति के अइसन जोड़ला जेकर से खोरठा गीतें एगो जादू डाइल देल हथीन। विनय जीक लिखल गीतें आर बनवल धुन सजाइ के अलबत खोरठा जगतें पसराइ देल हथीन। जमाना टेप - रिकॉर्डर केसेट कर हलइ। खोरठा गीत संगीतें एगो कारांति आइ गेल। मने एगो अलबत लोकप्रियता पसइर गेल। आइज एगो खोरठा भासी खोरठा भासा के पहचाने नाइ हला मनतुक आइझ ओकरा राष्ट्रीय स्तरें पहुंचवे में विनय जीक ढ़ेइर जोगदान हइन ।

विनय जी एगो बोड़ सवांगेक गीतकार बा रचनाकार लागथ। इनखर गीतें जीनगीक पइत बेवराक साड़ा पावा हे।तोहिनेक गीतें जुवान हिया के धड़कावे वाला हे, बुढ़ा सब के रिझाव हथ त जनी सब के ममता आर करूना ले भइर दे हइ ।

माइनगर विनय तिवारी जीक बहुआयामी गीतेक बिखिआत हथ। एखन तइक एक हजार ले बेसी गीत लिखल हथ। भिनु-भिनु भाभ आर बिसय के हइ। इनखर ढ़ेइर ले ढ़ेइर आबगा पहर आर भकति भाभ में बेसी हइन। तकरे लोकप्रियताक चलते टी सीरीज में ढ़ेइर दिन तइक काम करला। पहिले केसेट चलो हल मनतुक एखन यू- ट्यूब आर सोससल मीडिया जमाना आइ गेल हइ। मनतुक विनय जीक लोकप्रियता टा कम नाइ भेल हे। बलकी दिने-दिन आरो बाढ़ते जाइ रहल हे ।

विनय जीक एतना बोड़ कामयाबी आर सोहरतेक ई मुकाम टा अइसे हीं नाइ मिलल हइ। हिञा तक पहुँचे में कतेक मेहनत करला आर कतेक धिकारेक बात तलबिच करला तकर कोइ ठेकान नाइ। एगो गरीब बाभन पइरवारे जनमल। छउवे घरी ले गीत संगीते ढ़ेइर चेठा हलअइन जेकरा आपन मने ठानला आर एगो ठेकान तक पहुंचवे में जोगदान देल्थीन। आपन मातरी भासा में गीत आर कविता लिखे लागला। बी0 ए0 पास करल बादे विनय जी आपन माय, माटी, भासा के आगु बढ़वे में लाइग गेला। घर परिवाइर आर समाज ले कते विरोधेक सामना करे भेलइन । कते लोक त हांसी ठठाक उड़वल हला। आर कतेक टाका-पइसाक समस्या झेले भेलअइन। मकिन विनय जी त विनय जी होन, आपन मने ठाइन लेल हला जे कतनो बेजाञ आवत मनतुक खोरठा के छाड़ब नाइ। विनय जी आपन लइछ के दोसर बाटे नाइ बिदराइ के आपन धुने चलइत रहला। आखिर ऊ दिन टा बछरो-बछर बीतल बादे आइल। जखन खोरठा गीत के चाहे वाला एक लाख ले करोड़ो होइ गेला। माने खोरठा गीत पइत लोकेक मुंहे चले लागलइन। लोके आपन हियाञ बइठाइ लेला। सफलताक पहाड़ उनखर गोड़ चुमे लागल। आबगा पहरे खोरठा गीत संगीत सिनेमाक सफरें गोटा पचीस बछर तइक लगाइत चलइत रहल। आगुवो चलइत रहथ। विनय जी खोरठा भासा साहित बा गीत संगीत के बढ़ावे बा राष्ट्रीय स्तरें पहचान दिवे खातिर राइत दिन मेहनइत करइत हथ। धइन हे, झारखंडेक सपुत विनय तिवारी जी, जे खोरठा भासा के > देखे P06

हरमू नदी में बोहल करीब 85 करोड़ रुपया

ओम प्रकाश कुमार

राँची : झारखण्डेक राजधानी रांची कर एगो पहचान दियावेवाला सहरेक मांझे - मांझ कइएक हजार - लोगेक पियास मेटावे वाला, खेती - बारी के हरियर रखे वाला, एकरे से गोटे सहर में छोट बोड,लाखों करोड़ों के कतइ रकमेक घार बिल्डिंग बनलय। दुसर के जीवन दान दिए वाला आइज आपन जिनगी खातिर सरकार आर लोगवइन के आसे आपन पहचान के इ धरती से मिटाय रहल हइ। आइज ओहे आंखी लोर डबडबाय कांदअ हइ, बिलखअ हइ आर कह-हइ बचे दे हमरा! साफ-सुथर आर ओहे पुरना हरमू नदी रहे दे हमरा।

अगर बात करल जाय इ नदी कर तो ई पहिले एते सुंदर रहय की साइंझे बिहाने हियां कर लोग मन भुलावे ,समय बितावे आव हलथ। मकीन परदूसन आर अतिकरमन से नदी के असतितव संकट में हइ।

अइसन भी नाय हइ कि जीरनोदार कर परिआस नाय करल गेल हइ। नदी के सुंदरीकरन आर देख-रेख खातिर भाजपा सरकार में एगो जोजना भी लानल गेल रहय। आर ओहे जोजना के आधार पर करीब करीब पचासी करोड़ रुपया खरचा करल गेल। मकिन नाइ तो नदी कर सूरत बदलल आर ना ही सीरत।

इ दु दशक ले नदी के धाइरे - धाइरे एतना आबादी बइढ़ गेल हइ कि टोला मोहल्ला से बहराइ वाला सोब गंदा पानी कर नाली एहे नदी में

नदी बनल नाला, हरमु नदी कर इ दुरदसा

गिरे हे। आर तो आर संकार-पतार सोब एहे नदी में फेके लागल हथ। एहे वजह हय कि आइज इ नदी गोटे दूसित भय गेल हइ। कधियो फरिया पानी कर संगे कल कल बोहे वाला करीब साइठ फुट ले बेसी चौउड़ा नदी आइझ खाली दस फुट करिया पानी कूड़ा कचरा कर नाला बइन के रइह गेल हइ।

भाजपा सरकारेक समय में नदी के जीरनोदार करे खातिर एगो जोजना लानल गेलय।आर जुड़कू नाम के कंपनी के सुंदरीकरन आर देख रेख करे खातिर जीमा दियल गेल। मकिल जुडकू तो आपन जुगाड ले सुंदर बनाय देलय । मकीन नदी नाय नाला के रूपे, आर नदी के धाइरे - धाइर नाना बरन के 5000 ले बेसी गाछ लगावल गेल रहय, मकीन आइझ देखल जाय तो आधा ले बेसी गाछ सुइख के सिराय गेल हय। नदी धारी लोगवइन के घुरे खातिर सीमेंट से डिजाइन बनावल पखन (पेबर ब्लॉक) से डहर बनलय मकिन हियाँ लोगेक जगह टोला से निकले वाला बेकार पानी इहे डहर में बोइह रहल हइ। हियां कर लोगेक मानल जाय तो इ गोटे मामला में करीब पचासी करोड़ रुपया के भाजपा सरकार के देख रेख में जुड़ुकू कर संगे मिल के पइसा के बंदरबाट करल गेल हइ।

अगर आइजके सरकार तइनको इ नदी के बारे में सोचले, तो सरकार आपन या कोनो अधिकारी के देख - रेख़ में इ नाला के नदी के रूप दियल जाय सके हे। जेकर से आस-पास के लोगेक पानीक तकलीफ नाय भेतय आर रांची के पुरना पहचान के फिर से नावा बनावाल जाय सके हे।

खोरठा बिकासेक डहरें आर विनय तिवारी

आगु बढ़वे में एगो 'धुव्र तारा' बइन के आइल हथ। विनय जी ढ़ेइर टीवी चैनल आकाशवाणी रांची आर पत्र- पत्रिका में परसारित आर परकासित भेल हइन। जेरम ई टीवी बिहार, आकाशवाणी राँची आर झारखंड सरकारेक ऐतिहासिक पत्रिका 'आदिवासी' में उखरावल गेल हइ। इनखर अइसन ढ़ेइर कविता हइन जे एखन विश्वविद्यालय स्तरें एकर लिखाइ-पढ़ाइ चइल रहल हइ।

इनखर गीत खोरठा छेतरेक ढ़ेइर नामी गिरामी गायक मनोज देहाती , गौतम कुमार महतो , कैलाश देहाती, पायल मुखर्जी, एकर अलावे बॉलीवुडेक कुमार सानु , उदित नारायण, सपना अवस्थी आर भजन सम्राट अनुप जलोटा जइसन बिखिआत कलाकारें आपन साड़ा देल हथ। इनखर जोगदानेक खातिर कुछ लोक त इनखा खोरठाक 'समीर' के नामे हकवो हथ ।

विनय जी गीतें त आपन लोकप्रियता बनवले हलथ। एकर छाड़ा खोरठा सिनेमा कर सुरूआत करला। विनय जी खोरठा फिल्में गीत, पटकथा आर संवादेक रचना करल हथ । खोरठा फिल्म 'हामर देहाती बाबू' में पटकथा लेखन, खोरठा फिल्म 'देय देबो जान गोरी' में गीत लेखन नागपुरी फिल्म करमा में गीत लेखन, खोरठा सोट फिलम 'पिता कि मान बेटियां' में पटकथा व निर्देशन करला, खोरठा फिलम 'झारखण्डेक माटी' में गीत आर लेखकेक भूमिका निभावल हथ। 'पिता का मान बेटियाँ' सोट फिलम में झारखण्ड राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ खोरठा फिल्म के पुरस्कार दियल गेल हलइ।

खोरठा साहित, गीत-संगीत, सिनेमा, साहितकार, कलाकार सभेक हक बा सम्मान दिवे खातिर विनय जी जिमिरजिट लागल हथ। कऐक बेइर उलगुलान करला। सरकार से चिठी पतरो करला। मीडियाक माइधमें कतेक राव उठावला जे लगस्तर एखनु जारी हइ ।

विनय जीक चरचित खोरठा गीत

- तोयँ हामर दिल लागें
- जुगें जुगें बेटी भेलइ पोरेक धन सदाय,,
- ए मायं गो आँचरा टा भोरी दे विदाय
- फेर कहिया तोयँ अइबें रे दादा घुरि के आपन देश
- एहे रे बगिचवें खेललीं एहे रे
- हामर छोटानागपुर हामर हिरानगपुर
- हामर राइज झारखंड महान
- आब नाञ रुकब रे आब नाञ झुकब रे
- आइ जीहें तोञ नदिया किनारे
- ओ मितवा आइ जो रे
- तोरे इयादें राइत दिन दिलवा हमर कांदें

कविता

हामर पेटेक आइगीं

हामर पेटेक आइगीं
पोइड़ के बानी-छाय होय जाय
हामर हिंछा, हामर बुधि
हामर उलगुलान, हामर सोच
हामर पेट आर माड़-भात ।
एकर बिचें हाड़तोड़वा काम
जे कामें खुइन डबेइक के
लाल से सादा बइन के
घामेक रूपें चुई के देही ले
बाहिर बोइह जाय ।
आर हामर देहिक हाड़
चिंता फिकिर के घुंइन से
फोंकला होय जाय ।
हामर जेनी आर गीदर-बुतरुक पेटें
सूधे नून-भात
आर हामर पेटें एक डुभा मांड़।
हाय रे हामनिक पेट !
आर निझें नायं खोजे
हामनिक पेटेक लहकल आइग ।
निझत किरम
सूधे मांड़-भातें!
आलू-बइगन,बिलाती के भइरता
आर कांचा मेरचाइ तो
नायँ जुटवे पारों
कहाँ पाइब बेस बेस तियन
मास,माँछ, रकम रकम के सवाद
वाला हेन तेन खाएक-पिएक
जिनिस!
मोन माइर के अधबुढ़ा होय गेल ही
घार साँसरेक परे में
जेनी-गिदरेक मोहें
कोन्हों बोलें नायं पारी
धुरबाज गुलाक बिरूधें
घार से डेग बडवे नायं पारी
सोसनकारी ,अतियाचारिक
फांदा गुलाक काटे
आब मुहें बोली नायं फेफरिं फूटे हे
आर गोड़ चले नायं जइसन
पोलियो मारलहे।
मेंतुक सुनवब सोब
आपन गीदर-बुतरुक
आपन गउरबसाली इतिहास
आपन कइहनी की कइसन
हमनिक संगें छल, कपट,परपंच
आर कुटिचारी कइर कुन
आइज हमनिक सोब कुछ लुइट
कुन ई सोब राजा भेल हथ।
आर ऊ सोब आपन सुखेक खातिर
हमनीके नोकर बनाइके राखल
हथ।

✍ **विनय तिवारी**
(झारखंड सरकार से सम्मानित)
धनबाद, झारखंड

अइलइ खेती-बारिक दिन

निरन दिन बितलइ,
अइलइ खेती-बारिक दिन।
टेके-छेके होतइ गोरू,काड़ा,बाछा,
ताबे अइतइ साभेक बेस दिन।

अदार नाञ अब छोड़ा ओखनिक,
बचवा जोंडरा आर धानेक बिहिन।
खेतें जइर लगावा ताक सेइ,
टेके होतउ आब दिनोंदिन।

कसूं ओखनिक नाञ टेक-छेंक करभेह,
खाय जीबथून आर गाइंज देबथून।
ताब की रोपभेह खेतें आपन?
आर बिहिन फेर नाञ मिलतउ!

छगरी-पठरू आर भेड़ी-लेरू,
बाँइध के राखा तघिला से खूँटी।
बिहिन चरलें कोय नाञ सुनतउ!
किसाने देतउ गारी अनपथारी।

ओकर सेइ बेस गोरखिया राइख ले,
आर नेतो डंड भोरे होतो!
आर नाञ पारबें ताब अपने टेक-छेक,
अतना बिचार तो करे होतो।

साभे कहो हइथ एके बात,
सो चास आर एक ताक।
कसूं रोपा पछुवाय गेलो ताब,
बोकी लाइग मोरतउ धानेक पात!

✍**पुनीत साव**

झार न्यूज खोरठा में विज्ञापन के
लिए संपर्क करें ...
मो० 7717748632

वर्ष :01, अंक : 01, रजिस्ट्रेशन : UDYAM-JH-19-0000800, संपादक (हिंदी): प्रणय प्रबोध पाठक, संपादक (खोरठा): डॉ दिनेश कुमार दिनमणि, अनाम ओहदार, संपादकीय सलहकार : नवजीत कुमार सहदेव, फोन : संपादक 7717748632, विज्ञापन : 9199255612, प्रसार विभाग : 9199255612, ई मेल : jharnewskhortha@gmail.com, सुझाव या शिकायत khorthajharnews@gmail.com पर मेल करें।